POLITICA SCIENCE Dep.
B.A. Part - I, Paper II

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr L.K.V.D College, Tajpur,
Samastipur

एम. एन. रॉय

मानवेंद्रनाथ रॉय का जन्म 1887 ई० में बंगाल के चौबीस परगना में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। उनके पिता जिस स्कूल में शिक्षक थे वहां से उन्होंने प्रारंभिक स्कूल की शिक्षा प्राप्त की। वह बंगाल टेक्निकल इंस्टीच्युट जो अब जादवपुर विश्वविद्यालय है, से उच्च शिक्षा हेतु दाखिला लिए एवं शिक्षा प्राप्त की।

एम. एन. रॉय अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में राष्ट्रवादी क्रांतिकारी थे। वह बंकीमचंद्र और विवेकानंद से प्रभावित थे। वह बंगाल के मध्यमवर्गीय, शिक्षित युवकों के बीच राष्ट्रवाद का प्रसार करते थे। 1905 ई० में बंगाल का विभाजन हुआ। एक बहुत बड़ा जन आंदोलन इस विभाजन के विरोध में उमड़ पड़ा। एम. एन. राय एवं उनके साथियों ने भी इस विभाजन के विरोध में आंदोलन चलाया। एम. एन. रॉय का यह मानना था कि अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता केवल संघर्ष करके ही मिल सकती है।

'भारत की स्वतंत्रता हेतु धन एवं शस्त्र

की व्यवस्था करने वह विदेश भी गए। विदेश में उन्होंने एक समाजवादी पार्टी की स्थापना की जो बाद में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ मैक्सिको बनी। एम. एन राय का मास्को द्वारा भी स्वागत किया गया। अब राय साम्यवादी विचारधारा के समर्थक हो गए। उन्होंने लेनिन से भी भेंट की और उनकी विचारधारा से काफी प्रभावित हुए। एम. एन. राय लगातार भारत की स्वतंत्रता हेतु प्रयास भी करते रहे।

एम. एन राय को स्टालिन की नीति पसंद नहीं आई। स्टालिन ने उनसे मिलने से भी इंकार कर दिया। इसके बाद एम. एन. राय भारत लौट आए। यहां पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उनपर कानूनी प्रक्रिया चली और उन्हें जेल की सज़ा हुई। वह 1936 में रिहा हुए। अब तक उनका स्वास्थ्य काफी गिर चुका था।

एम. एन राय पुनः भारत की स्वतंत्रता के प्रयास में लग गए। अपने जीवन के आखिरी समय में राय नवमानवतावादी दार्शनिक हो गए। नव मानवतावाद मानव की संप्रभुता एवं स्वतंत्रता का समर्थन करता है। नव मानवतावाद यह भी मानता है कि मनुष्य को नैतिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वतंत्र होना भी आवश्यक है।

Dr. Husna Ara
Asst. Professor